INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X	Department: Hindi	Date of submission: NA
Question Bank: 15	**Topic: आत्मत्राण**	Note: Pl. file in portfolio

कविता - आत्मत्राण - रवीन्द्रनाथ ठाकुर - 1861 - 1941

अनुवाद - हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

कवि करुणामय प्रभु से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु! संकटों से मुझे मत बचाओ । उनसे न डरने की शक्ति दो। मुझे दुखों को सहने की शक्ति दो। कोई सहायक न मिले तो भी मेरा बल न हिले। हानि होने पर भी हारूँ नहीं। मुझे सांत्वना चाहे मत दो । मैं सुख में भी हे प्रभु ! आपको सदा याद रखूँ । कभी भी तुम पर संशय न करूँ ।

प्रश्न 2. 'विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं' कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तरः कवि का यह मानना है कि प्रभु में सब कुछ संभव कर देने का सामर्थ है, पर वह कभी नहीं चाहता कि वही सब कुछ कर दे। कवि कामना करता है कि किसी भी आपद-विपद में, किसी भी परीक्षा में सफल होने के लिए संघर्ष वह स्वयं करे, प्रभु को कुछ न करना पड़े। वह प्रभु से केवल आशीर्वाद एवं निर्भयता की कामना करता है।

प्रश्न 3. कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है?

उत्तरः कवि कोई सहायक के न मिलने पर यह प्रार्थना करता है कि तब भी उसका बल-पौरुष हिलना नहीं चाहिए अर्थात् वह सहायक न होने पर भी केवल अपने बलबूते पर संघर्ष कर सकता है। वह अपने आत्मविश्वास को हर हालत में बनाए रखना चाहता है।

प्रश्न 4. अंत में कवि क्या अनुनय करता है?

उत्तरः कवि अंत में यह अनुनय करता है कि प्रभु उसे दुःखों को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। वह सुख और दुःख में एक जैसा अनुभव करे। जब उसके जीवन में सुख हो तो भी वह विनम्र होकर ईश्वर को अपने आस-पास अनुभव करे तथा जब दुःखों में घिर जाए तो भी ईश्वर पर से उसका विश्वास न डगमगाए।

प्रश्न 5. 'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः इस कविता का शीर्षक 'आत्मत्राण' पूर्णतः सार्थक है। इसका अर्थ है- स्वयं अपनी सुरक्षा करना। कवि प्रभु से मदद नहीं माँगता। वह परमात्मा को हर कष्ट से बचाने के लिए नहीं पुकारता।

वह स्वयं अपने दुःख से बचने और उबरने के योग्य बनना चाहता है। इसके लिए वह केवल स्वयं को समर्थ बनाना चाहता है। यह शीर्षक कविता की मूल भावना को पूर्णतः स्पष्ट कर देता है। अतः सार्थक है।

प्रश्न 6. अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या-क्या प्रयास करते हैं? लिखिए।

उत्तरः हम अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए भगवान से प्रार्थना के अतिरिक्त दुःखों से छुटकारा पाने का हर संभव प्रयास करते हैं। हम अपने-अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हुए अनेक लोगों से प्रेरणा पाकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। ईश्वर की प्रार्थना के साथ-साथ हम अपने पर विश्वास रखकर ही अपनी इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं।

प्रश्न 7. क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है? यदि हाँ, तो कैसे?

उत्तर: हाँ, हमें कवि की यह प्रार्थना अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है। इसका कारण यह है कि यह प्रार्थना हममें आत्मविश्वास को जगाती है जबकि अन्य प्रार्थना गीत हमारे अंदर दास भावना का संचार करते हैं। यह प्रार्थना हमें निर्भय एवं संघर्षशील बनाती है। निश्चय ही यह प्रार्थना अन्य प्रार्थना गीतों से अलग है । यही इसकी सबसे अच्छी बात है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए:

नत शिर होकर सुख के दिन में,
तव मुख पहचानूँ छिन छिन में।

उत्तरः कवि प्रार्थना करता है कि हे करुणामय ईश्वर। जब उसके जीवन में सुख के दिन आएँ तो भी वह उसे न भूले। वह पल-पल सिर झुकाकर उसके दर्शन करता रहे।

प्रश्न 9. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए:

हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानें क्षय।

उत्तरः कवि हानि उठाने पर भी ईश्वर से प्रार्थना करता है कि यह मन से हार व माने। कवि कहता है कि जीवन में चाहे उसे सदैव लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़े तो भी उसे दुःख नहीं है। यह तो केवल इलना चाहता है कि उसका मन कभी भी संप से जूझते हुए हार न माने।

काव्यांश के आधार पर बहुविकल्पीय प्रश्न -

नत शिर होकर मुख के दिल में तव

पुख पहचा किन-किन में।
दुःख-रात्रि में करे बेचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणाप
तुम पर कर्म नहीं कुछ संशय

(क) कवि ने सुख के दिनों के लिए ईश्वर से क्या विनती की है?

(i) सुख के दिनों में ईश्वर को याद रखने की (ii) बड़ा मंदिर बनवाने की
(iii) नियमित जाप करने की (iv) गलतियों को माफ करने की

(ख) निखिल मही द्वारा वंचना करने से कवि का क्या आशय है?

(i) संपूर्ण ब्रह्मांड द्वारा धोखा खाना (ii) संपूर्ण ब्रह्मांड द्वारा निंदा करना
(iii) उपरोक्त दोनों (v) ब्रह्मांड के बराबर माया

(ग) 'मही' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(i) पाताल (ii) आकाश (iii) धरती (iv) वायु

(घ) काव्यांश का फूल भाव है-

(i) दुख में ईश्वर पर विश्वास करना (ii) सुख में ईश्वर पर विश्वास करना
(iii) दुख-सुख दोनों में ईश्वर पर विश्वास करना (iv) भगवान के भरोसे नहीं रहना चाहिए

(ङ) काव्यांश में 'नत शिर' से क्या अभिप्राय है?

(i) सिर झुकाकर (ii) सिर उठा कर
(iii) सिर हिला कर (iv) उपरोक्त कोई नहीं